[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....
आपका अनुक्रमांक.....

Sr. No. of Question Paper : 15163 **L**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता : सगुण भक्ति काव्य ऐव रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : **ITEP**

Semester : II, 2025-2026

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

(1) निम्नलिखित की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 9×3=27

(क) जामवंत के बचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ।।
तब लगि मोहि परिखेहु तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई ।।
जब लगि आवौं सीतहि देखी। होइहि काजु मोहि हरष बिसेषी ।।
यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा । चलेउ हरषि हियं धरि रघुनाथा ।।

अथवा

तड़ाग नीरहीन ते सनीर होत 'केसोदास,' पुंडरीक झुंड भौर मंडलीन मंडही ।
तमाल बल्लरी समेत सूखि सूखि कै रहे, ते बाग फूलि फूलि कै समूल सूल खंड हीं।
चितै चकोरिनी चकोर मोर मोरनी समेत, हसं हंसिनी सुकादि सारिका सबै पढ़ै।

(ख) जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहै।

यह ब्योपार तिहारो ऊधो ऐसोई फिरि जैहै।।
जापै लै आए हौ मधुकर ताके उर न समैहै।
दाख छाँड़ि कै कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै ?
मूरी के पातन के केना को मुक्ताहल दैहै।
सूरदास प्रभु गुनहि छाँड़ि कै को निर्गुण निरबैहै ?

अथवा

जटित नीलमनि जगमगति सीक सुहाई नाँक ।
मनौ अली चंपक-कली बसि रसु लेतु निसाँक।।
मिलि चंदन-बेंदी रही, गौरैं मुँह न लखाइ।
ज्यौं-ज्यौं मद-लाली चढ़ै, त्यौं-त्यौं उघरति जाइ॥
(ग)रूपनिधान सुजान सखी जब तैं इन नैननि नेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।
एक अचंभौ भयौ घनआनंद हैं नित ही पल-पाट उघारे।
टारैं टरैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन-मोह के तारे।।

अथवा

साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धरि,
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है।
भूषण भनत नाद बिहद नगारन के,
नदी-नद मद गैबरन के रलत है।।
ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल गैल,
गजन की ठैल –पैल सैल उसलत है।
तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि,
थारा पर पारा पारावार यों हलत है।।

(2) भ्रमरगीतसार के आधार पर प्रेम और योग तथा निर्गुण एवं सगुण के द्वंद्व पर प्रकाश डालिए। 15×1=15

अथवा

सुन्दरकाण्ड की मूल संवेदना क्या है? विचार कीजिए।

(3) बिहारी रस सिद्ध कवि हैं।विवेचन कीजिए। 15×1=15

अथवा

सिद्ध कीजिए कि घनानंद प्रेम के पीर के कवि हैं।

(4) कवि भूषण की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15×1=15

अथवा

केशवदास की काव्य प्रतिभा की समीक्षा कीजिए।

(5) किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। 9×2=18

(क) बिहारी की काव्य कला
(ख) भूषण ओज के कवि हैं।
(ग) भ्रमरगीतसार का वियोग-पक्ष
(घ) तुलसीदास का भाषा कौशल
(ड़) घनानंद और प्रेम की उदात्तता
(च) केशव की रीति-बद्धता